सूरज के तेज को नहीं झेल पाया आइसॉन

धूमकेतु आइसॉन, जिसका इंतज़ार बड़ी हसरत से किया गया था, वह सूरज के ताप को नहीं झेल पाया और सूरज के पास पहुंचते ही तहस-नहस हो गया।

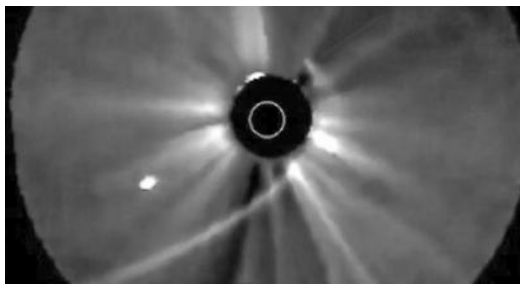

धूमकेतु सौर मंडल की बाहरी परिधि के निवासी होते हैं। सूर्य से करीब 4 अरब कि.मी. दूर के इस क्षेत्र को ऊर्ट क्लाउड कहते हैं। सूर्य के इर्द-गिर्द उनका परिक्रमा पथ इतना अंडाकार होता है कि वे सदियों में एक बार सूर्य के नज़दीक आते हैं और फिर अरबों कि.मी. दूर निकल जाते हैं। आइसॉन धूमकेतु पहली बार सूर्य के नज़दीक आया था।

ऐसा माना जा रहा था कि नवंबर-दिसंबर में यह आकाश में खूब चमकेगा। कहा तो यहां तक गया था कि शायद यह चांद के बराबर चमकेगा। दूरबीनों की मदद से इसे सितंबर 2012 में ही देखा जाने लगा था। फिर इसकी एक लंबी पूंछ विकसित हुई जो धूमकेतुओं की पहचान होती है।

28 नवंबर के दिन आइसॉन सूर्य के सबसे नज़दीक पहुंचा। उस दिन यह सूर्य की सतह से मात्र 11 लाख किलोमीटर की दूरी पर था। तुलना के लिए यह देखिए कि पृथ्वी की सूर्य से दूरी 15 करोड़ कि.मी. है। एक अनुमान के मुताबिक सूर्य से 11 लाख कि.मी. की दूरी पर इसका तापमान पूरे 2000 डिग्री सेल्सियस रहा होगा। इतने तापमान पर तो अधिकांश चीज़ें पिघल जाती हैं या भाप बन जाती हैं।

वैसे भी चूंकि आइसॉन पहली बार सौर मंडल के अंदरुनी हिस्से में आ रहा था, इसलिए इसके व्यवहार का पूरी तरह अंदाज़ा लगाना मुश्किल था। बहरहाल, 28 नवंबर के दिन जब यह सूर्य के नज़दीक पहुंचा तो इसके दीदार की सारी उम्मीदें ध्वस्त हो गई। जैसी कि आशंका थी आइसॉन लौटकर ऊर्ट क्लाउड नहीं जाएगा। अब वैज्ञानिक यह इंतज़ार कर रहे हैं कि बचा-खुचा आइसॉन जब एक बार सूर्य से दूर निकलेगा तो पता चलेगा कि कितना बचा है। ***(स्रोत फीचर्स)***